माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 12 जून, 2015 को सेक्टर–17, चण्डीगढ में विश्व रक्तदान दिवस पर आयोजित रक्तदान शिविर के उद्घाटन अवसर पर दिया गया भाषण।

श्री शिव कांवड़ महासंघ चेरिटेबल ट्रस्ट के सभी पदाधिकारीगण, तीन अन्य सहयोगी संगठनों के पदाधिकारीगण, सभी आमंत्रित महानुभाव, प्यारे रक्तदाताओ, पत्रकार बंधुओ, भाईयो व बहनो!

मेरे पास कोई समय की कमी नहीं है। ऐसे जो काम होते हैं उन्हीं के लिए समय होता है। ऐसे कार्यक्रमों में जब मैं आता हूं तो बहुत उत्साहित भी अनुभव करता हूं। इस तरह के कार्यक्रमों में आने के बाद एक अजीब भावना मन के अंदर पैदा होती है और वह भावना सीधे भगवान से जोड़ती है। यहां श्री शिव कांवड़ महासंघ चैरिटेबल ट्रस्ट की इतनी सारी गतिविधियां गिनाई जा रही थीं। यह 20 वर्ष से लगातार समाजसेवा के काम में संलग्न है।

रक्तदान तो वास्तव में महादान है। भगवान जीवन देता है और रक्तदान करने वाले, अगर आवश्यकता पड़ती है तो उस जीवन को बचाते हैं। इसलिए Blood doners are next to God. जो जीवन देता है उसकी दूसरी पंक्ति में हमारे Blood doners आ खड़े होते हैं। श्री शिव कांवड़ महासंघ चैरिटेबल ट्रस्ट के समाजसेवी हर साल लगभग 60 कैंप लगाते हैं। मैं अभी जानकारी ले रहा था तो लगभग 200 की संख्या में इनके पास वे लोग रजिस्टर्ड हैं जो पलेट डोनर हैं। रक्त डोनेट करने वालों की संख्या तो इनके पास 6000 है।

चण्डीगढ, मोहाली और पंचकूला को मिलाकर बना यह ट्राइसिटी देश में बहुत मशहूर है। इस ट्राइसिटी की रक्त की जो आवश्यकता है वह श्री शिव कांवड़, महासंघ चैरिटेबल ट्रस्ट व अन्य सबके सहयोग से पूरी की जाती है। यह बहुत बड़ा योगदान है। इस काम में जो लगे हैं, Blood donate जो करते हैं उन सबको मैं शुभकामनाएं देना चाहता हूं। उनके प्रति मैं स्वयं को, अपने आपको ऋणी भी समझता हूं। वे बहुत बड़ी मानव सेवा कर रहे हैं।

अभी–अभी आपके इस कार्यक्रम का उद्घाटन मैने किया है और Blood doners के साथ बातचीत भी की है तथा एक एम्बुलैंस का लोकापर्ण भी किया है। मैं सोच रहा था कि यह महासंघ और भी अन्य सब संगठन, श्री शक्ति सेवा मंडल, जो नाम ले रहे थे, ये इतनी सब प्रेरणा कहां से प्राप्त करते हैं? तो मेरी यह राज समझ में आया कि Blood donation और अन्य गरीब बच्चों को विद्यालयों में जाकर पंखे और अन्य सहयोग का जो काम ये करते हैं, उसके पीछे भगवान की भक्ति है, भगवान के प्रति उनका समर्पण है, आध्यात्मिक शक्ति है। किसी भी संगठन को, किसी भी प्रोजैक्ट को, किसी भी काम को जब आध्यात्मिक सहारा मिलता है, वह जो भावना उसके अन्दर ओतप्रोत होती है, वह शक्ति मिलती है तो वह सफल हो जाता है। क्योंकि ऐसी शक्ति उसमें से उत्पन्न होती है कि उसमें कोई कमी नहीं रहती। जितनी ज्यादा आवश्यकता होती है उतना ही सब वे पूरा करते हैं।

मेरी बहुत–बहुत शुभकामनाएं! और यह संगठन जो इस तरह के कामों में संलग्न है उसकी मैं प्रशंसा भी करना चाहता हूं, उनको आशीर्वाद भी देना चाहता हूं। मानवमात्र की सेवा सबसे बड़ी सेवा है। ईश्वर की आराधना अगर करनी है और भगवान की भी सेवा करनी है तो मानवसेवा से बड़ी कोई सेवा नहीं। इसलिए स्वामी विवेकानंद ने कहा भी था कि नरसेवा ही नारायण सेवा है।

इस अवसर पर सभी को पुनः शुभकामनाएं देता हूं और बधाई देता हूं। श्री शिव कांवड़, महासंघ चैरिटेबल ट्रस्ट के काम की प्रशंसा करते हुए, उनको और शक्ति मिले और अच्छा काम करें, इस तरह की अपेक्षा करते हुए, आशीर्वाद देते हुए, आप सबको धन्यवाद देते हुए मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

जयहिन्द!